रंग बिरंगा-रंगमंच

फैसल अल्काज़ी

चलो नाटक करें

कितनी मजेदार होती है कल्पना की दुनिया ? जरा सोचो कि तुम एक चिड़िया हो, पर फैलाए, जहां मन चाहे, फुर्र से उड़ गए ? या यह कि डाकू तुम्हारे घर में घुस आएं और तुम हो अकेले, फिर क्या होगा ? मान लो कि तुम एक बहुत ही अमीर मेम साहब हो, जो नाक उठाए चली जा रही है। केले का छिलका पैर के नीचे आया और अर्र – धड़ाम । हां, अब बताओ, कैसा लगा ऐसी कल्पनाएं करने में ? मजा आया ! फिर तो तुम नाटक में हिस्सा लेने के लिए बिल्कुल ठीक होगे।

इस युनिट में आपको बताया जाएगा कि नाटक में अभिनय कैसे करते हैं। और वे सब बाते भी जान सकेंगे जिनसे नाटक, मंचन के लिए तैयार होता है।

शुरू करते हैं कुछ आसान खेल और मजेदार तमाशों से, जो कि तुम अपने मित्रों के साथ कर सकते हो। अगर तुम सचमुच बहुत अच्छा अभिनय करना चाहते हो तो यहां बताए गए हर खेल बहुत ही जरूरी हैं।

हां, याद रहे कि नाटक करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं होते, लेकिन कुछ अभ्यास और गतिविधियां जरूरी है। इससे अच्छे अभिनय की दक्षता मिलती है।

सबसे पहले एक जगह ढूंढो जहां तुम ये अभ्यास कर सकते हो– कोई बड़ा सा कमरा, बरामदा, छत,गैराज या किसी पेड़ की छांव। सब आसपास काफी खुली जगह होना चाहिए । जहां तुम दूसरों से डांट–फटकार खाए बिना हल्ला–गुल्ला भी कर सको।

फिर चाहिए कुछ मित्र, जिनकी रुचि अभिनय में हो।

सैर करो

जो जगह आपने चुनीं है, उसका चक्कर लगाओ। उसके हर कोने को ध्यान से देखो अपने किसी मित्र के इशारे पर, चाहे वह ताली हो, सीटी या ड्रम की आवाज, अलग–अलग ढंग से चलो। कभी अपने पैरों की उंगलियों पर, कभी एड़ियों पर, पैरों को अंदर या बाहर की तरफ जोर दे कर। देखो की इस तरह चलने से तुम्हारे शरीर की पूरी गति कैसे बदल जाती है ? अब इन चालों को अलग–अलग गति से करो– धीरे, तेज; फिर अलग–अलग दिशाओं में –आगे, पीछे, एक तरफ। हर चाल में तुम्हें एक नया अनुभव मिलेगा– कभी तुम्हें लगेगा कि तुम सड़क के भिखारी हो तो कभी ऐसा कि कोई अमीर औरत पार्टी में जा रही है।

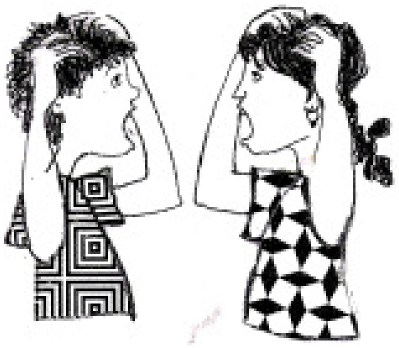

हमशक्ल

अपने किसी एक साथी को चुनो। मान लो कि वह तुम्हारा दर्पण है और तुम उसके सामने खड़े हो। कुछ ऐसे कार्य करो जो कि तुम रोज दर्पण के सामने करते हो– मुंह धोना, दांत साफ करना, बाल बनाना। तुम्हारे दर्पण यानि तुम्हारा मित्र भी वही करेगा, जैसा तुम कर रहे हो। नाचो, गाओ, और देखो कि तुम्हारा प्रतिबिंब कैसे तुम्हारी नकल करता है ! फिर तुम दर्पण बनो और दोस्त को अपनी जगह रखो ।
देखो, कितना मुश्किल है, किसी का प्रतिबिंब बनना !

पीठ से पीठ

अब कोई दूसरा साथी चुनो। उसके साथ पीठ से पीठ कर के खड़े हो जाओ। खेल शुरू करो इस तरह –मान लो कि तुम दो पुराने दोस्त हो जो कई बरसों बाद अचानक मिल गए हो। अब एक इशारे पर (जो कोई तीसरा साथी दे सकता है) मुड़ कर अपने दोस्त को खुशी से मिलो और बातें करो। कुछ समय के बाद फिर पीठ से पीठ कर के खड़े हो जाओ। इस बार मान लो कि तुम दो कटटर दुश्मन हो। अब मुड़ कर इस अनुभव का नाटक करो। तीसरा, नाटक/अभिनय यह हो सकता है कि तुम एक ऐसे देश में हो जहां की भाषा नहीं जानते और तुम्हें ''शौचालय '' ढूंढना है।

चमत्कारी मशीनें

अपनी नाटक मंडली के सभी साथियों को लेकर एक बड़ा सा गोल घेरा बनाओ। एक–एक कर के तुम्हारे सभी साथी इस घेरे में आ कर एक बड़ी मशीन का हिस्सा बनेंगे। हर हिस्सा (यानी साथी) उचित आवाज निकालेगा और मशीन जैसी हरकत करेगा। जब सभी हिस्से ऐसा करने लगे, तो मशीन को तेज करने की कोशिश करो। यानी सबकी गति और आवाजें तेज हो जानी चाहिए। फिर मशीन को धीरे करते–करते रोक दो।

इस खेल में तुम अपनी मनचाही मशीन बना सकते हो– जैसे खराब हो गई अंतर्राष्ट्रीय टेलीग्राम मशीन, त्यौहारों की मशीन जो होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस आदि की सुगंध बनाती हो, वगैरह।

आमने-सामने

आगे कढ़ाना है कि दूसरा भी वैसी ही सूरत बनाए,फिर तीसरा, चौथ.... । पहले तो बिना कुछ बोले ऐसा करो, फिर आवाज के साथ। देखो कि तुम यह तमाशा कितनी तेज और कितने खिलवाड़ के साथ कर सकते हो।

क्यों पसंद आए ना ये खेल–तमाशे ! तुम्हारी कल्पना को खुली छूट मिले; तुम अपने भावों को पहचान सकों; तुम्हारे साथियों में विश्वास पैदा हो तथा सभी को मजा आए। इसके लिए यह सब करना आवश्यक था।

अब शुरू करते हैं एक नया खेल, आवाज और स्वर का।

सांस लो

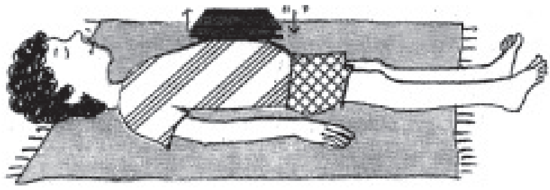

(1) पीठ के बल सीधा आराम से लेट जाएं। फिर अपने पेट पर एक किताब रखो और उसे अपनी श्वांस के साथ ऊपर–नीचे होता देखो। ऐसा 10–12 बार कर के अपने आपको इसका आदी बनाओ।

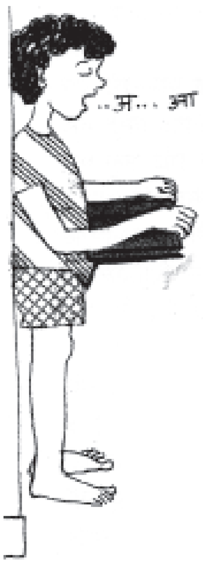

(2) अपनी पीठ को दीवार से सटा कर आराम से खड़े हो जाओ। किसी किताब का एक किनारा अपने पेट के साथ लगा लो। अब किताब को दबा कर सांस लो ताकि ज्यादा से ज्यादा हवा बाहर निकले । जब हवा निकल जाए तो धीरे– धीरे अंदर को सांस खींचो इस दौरान किताब को अपने से दूर करते जाओ ।

(3) अभ्यास नं. 2 को दोहराओ, इस बार आराम से मुंह के रास्ते सांस खींचते हुए (अंदर को)। फिर इसी को दोबारा करने की कोशिश करो, अ...आ, इ...ई.... की आवाज के साथ।

नए रंग–नए ढंग

अब तुमने अपनी सांस पर कुछ हद तक काबू पा लिया होगा। इसलिए अब कुछ और भी मुश्किल काम कर सकते हो, आवाजों के साथ।

यह दिलचस्प घटना देखो–''मुझे छुरी दे दो ।'' इसे तुम कितने अलग–अलग तरीकों से कह सकते हो ? इस बात के साथ खेलो– कभी इसे नम्रमा के साथ कहो, कभी आदेश के ढंग से , कभी धमकी मान कर। और भी कई तरीके से।

इसके अलावा भी कई और प्रयोग हैं –पहले दो शब्द चिल्ला कर बोलो, फिर रुक कर जल्दी से अंदर को सांस लो; मानो किसी ने तुम्हें चाकू से मारा हो। ''छुरी'' शब्द को फुसफुसा कर बोलो, थोड़ा और रुक कर उसके साथ ''कृपया'' जोड़ दो। देखो, कैसे बदलता है वाक्य का मतलब ? एक ही वाक्य को दूसरा अर्थ देने के लिए अपनी आवाज की भावना बदलो तथा रुकावट और बोलने की गति में भी नयापन लाओ।

ध्वनियों की दुनिया

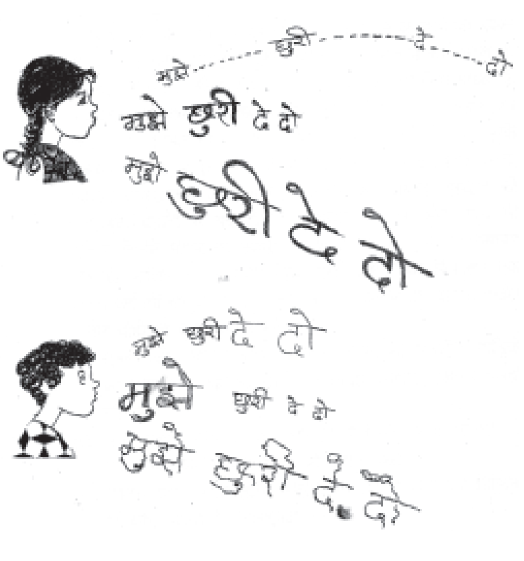

अब कुछ अलग ही करते हैं। अपने मित्रों के साथ उन आवाजों की नकल करो, जो तुम अपने आसपास सुनते रहते हो। शुरुआत में कोई सरल सा स्वर लें, जैसे आंधी की आवाज। पता लगाओ कि तुम किस प्रकार के स्वरों की नकल कर सकते हो; हल्की, सुहानी हवा जो तेज तूफान बन जाए; दूर का गरजता बादल जो पास आते–आते अचानक जोरदार कड़ाके में बदले; बारिश की रिमझिम जो मूसलाधार वर्षा बन कर फिर हल्की, लगातार बारिश बन जाए; पेड़ों के हिलने की आवाज, दरवाजे की चरमराहट, धड़ाके से बंद होती खिड़कियां या फिर और बहुत सी ध्वनियां जिनसे सावन का नजारा बन जाए। यह कर के कुछ नयापन लाने की कोशिश करो। प्रत्येक मित्र, अलग–अलग स्वर निकाले। एक विचित्र ध्वनियों की दुनिया बन जाएगी। ऐसा दो–तीन बार कर के देखो।

तुम चाहो तो ये भी कर सकते हो–

(क) सुबह सवेरे : गौरेया, कौवे, सड़क पर लोगों की बातचीत, गाड़ियों का आवागमन, चाय के प्यालों की आवाजें, नहाना, विविध भारती की धुन।

(ख) भूत बंगला : दरवाजों की चरमराहट, पैरों की आहट, चिमनी में हवा, अचानक चिल्लाना, भूतों की फुसफुसाहट।

(ग) दफ्तरी काम : टाइपराइटर, कुर्सियों की आवाज, बातचीत, टिफिन–खोलना,घंटियां, क्रिकेट–कमेंट्री, वगैरह ।

(घ) स्थानीय त्यौहार : लोक गीत, खाना बनाने की आवाजें, मंदिर की घंटी, लोगों के समूह की आवाजें।

पढ़ो और सुनाओ

कुछ कविताएं आगे दी जा रही हैं। इन्हें नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''महक सारे गली गली '' से चुना गया है। आरंभ करो एक साथी से, जो पूरी कविता सब को पढ़ कर सुनाए। इसके बाद कविता को अलग–अलग हिस्सों में बांट लों। कुछ हिस्से एक–एक कर के पढ़े जा सकते हैं, कुछ समूह में या पांच छह मित्रों के साथ। जरूरी यह है कि ऊंचा–ऊंचा पढ़ा जाए, न कि मन में । कविता को दिलचस्प बनाने के लिए अपनी आवाज में गति, लय, मात्रा और विभिन्नता लाओ। कुछ ध्वनियां भी निकाल सकते हो। कविता में भाव और गति लाने से पहले कविता को तीन–चार बार तेज स्वर में पढ़ लेना उचित होगा। ऐसी ही कुछ और कविताएं छांटो, जिनमें तुम्हारी आवाज का सही इस्तेमाल हो सके।

कैसा लगा ? मजा आया न ! एक अभिनेता के लिए यह जानना बहुता जरूरी है कि आवाज और स्वर का इस्तेमाल कैसे हो सकता है और हां, शारीरिक गति या हरकत का भी। इसलिए तुम हरकत करना सीखो– कैसे ? करके ।

ऑधी

रात हुई तारीकी छाई, मीठी नींद सभी को आई।
मुन्नू सोया अप्पा सोई, अब्बा सोए अम्मी सोई।
आधी रात हुई जब सोते, खर–खर–खर खर्राटे भरते।
चुपके–चुपके ऑधी आई, गर्द गुबारे उड़ाती लाईं।
चली हवाए सुर सुर सुर, कागज उड़ गऐ फुर–फुर–फुर–फुर।
खड–खड़–खड–खड़ पत्ते खड़के, डरने वालों के दिल धड़के ।
बजने लगे किवाड़ खट खट, घर वाले सब जागे झटपट ।
खटपट सुन कर मुन्नू जागा, उठ कर झटपट अन्दर भागा।
ऑधी ने फिर जोर दिखाया, फूस का छप्पर दूर गिराया।
टीन उड़ाई पेड़ गिराए, खपरे भी छत के सरकाए।
शाखें टूटी तड़–तड़–तड़–तड़, बादल गरजे गड़–गड–गड–गड।
बिजली चमकी चम–चम –चम–चम, बूंदे टपकीं कम–कम–थम–थम।
लेकिन वह बूंदें थीं कैसी, पट–पट–पट–पट ओले जैसी ।

–इस्माइल मेरठी

हम भी होते काश कबूतर

हम भी होते काश कबूतर ,
मजे उड़ाते दिन भर उड़ कर।
बच्चे हमें चुगाते दाने,
गाते मीठे–मीठे गाने।
खूब गुटर गूं करते दिन भर,
हम भी होते काश कबूतर।
हाथ किसी के कभी न आते,
यों फुर से फौरन उड़ जाते,
ना होता पापा जी का डर,
हम भी होते काश कबूतर ।
साथ हवा के बातें करते,
बस्ती के दिन रातें करते,
ना होता स्कूल का चक्कर,
हम भी होते काश कबूतर।
बिन पैसे हम खूब घूमते,
यों उड़ते आकाश चूमते, पेड़ो पर होते अपने घर, हम भी होते काश कबूतर ।

–**सूर्यभानु गुप्त**

उल्टी नगरी

उल्टी नगरी एक अनोखी, वस्तु जहां की उल्टी–पुलटी।
उल्टी दुनिया, उल्टा पर्वत,उल्टे पेड़ चिमनियां उल्टी।।
देतीं दूध चीटियां, खरहे हल खीचें, चूहे हलवाहे।
पैसा दुर्लभ, सुलभ अशर्फी, भोजन सबको खाना चाहे।।
दाढ़ी–मूंछें रखें औरतें, मर्द खिलाते घर में बच्चे।
रहते लोगों में मकान ही, झूठे जीते भरते सच्चे।।
सर पर जूता, पगड़ी पग में मच्छड़ की है बनी सवारी।
दिन में चांद चमकता, सूरज सारी रात करे उजियारी।।
जलता पानी, आग बुझाती, चलते सर के बल नर–नारी।
छप्पर तो जमीन पर रहता, घोड़ा पीछे, आगे गाड़ी।।
नाव चलाते मरुस्थलों में, सांझ जागते, सोते तड़के।
पांच बरस तक रहते बूढ़े, साठ बरस में बनते लड़के।।

सुनती आंखें, कान देखते, नीचे बाबू कुर्सी ऊपर ।
चढ़ जातीं पहाड़ पर नदियां, सिन्धु–झील से निकल निकल कर।।
एक बात का वहां बड़ा सुख,पढ़ते गुरु, पढ़ाते चेले।
मौज उड़ाते बैठ भिखारी, शहंशाह चलाते ठेले।।
राही ज्यों–के–त्यों रह जाते, और चला करती है डगरी ।
उल्टी सारी वस्तु जहां की, देखी ऐसी उल्टी नगरी।।

–राधेश्याम पोद्दार

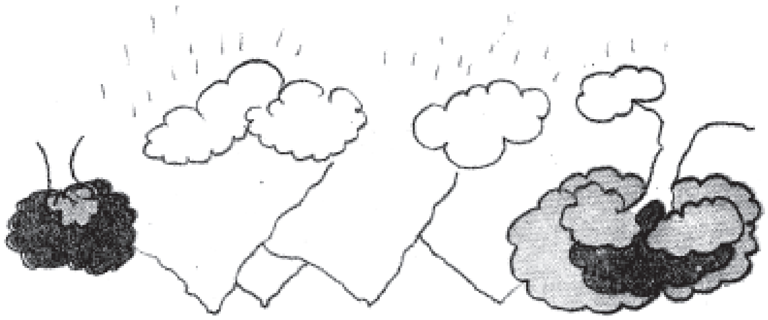

हिलो : कभी तुमने ऐसा कर के देखा है– एक साथ सिर हिलाना और कमर मटकाना । किसी भी हरकत के लिए तुम्हारे शरीर के अलग–अलग हिस्से काम आते हैं। हाथ, पांव और जोड़, जो हम विशेष प्रकार से ही हिला सकते हैं । अगर हम बहुत सी छोटी–छोटी हरकतों को इकट्ठा देखें तो हमारे पास विभिन्न प्रकार की हरकतों का भंडार हो जाएगा। अब बताई जा रही हरकतों को करने की कोशिश करो–

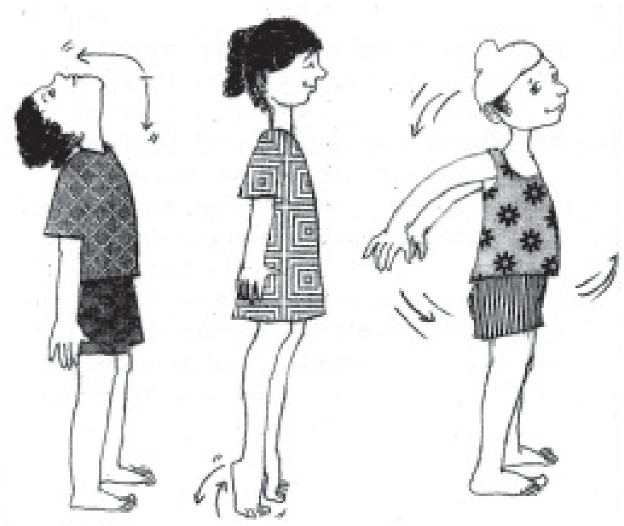

1. अपने पैरों पर बिलकुल सीधे खड़े हो जाओ, दोनों पैर एक (सामने) दिशा में रख कर। पहले अपना सिर आगे को गिरने दो, फिर उसे झटके से पीछे करो, कठपुतली की तरह। अब सिर को दाएं–बाएं हिलाओ, पहले एक तरफ गिराओ, फिर दूसरी तरफ। अंत में इन चारों हरकतों को बिना रुकावट के तेजी से करो।

2. अब आई तुम्हारे कंधों की बारी। पहले तो शरीर को ढीला छोड़ कर आराम से खड़े हो जाओ। लंबी सांस लो। कंधो को इस तरह ऊपर करो, मानों तुम्हारी गरदन है ही नहीं। फिर पीछे। अंत में बगैर रुके इन चारों हरकतों को एक के बाद एक कर के थोड़ा आराम करो।

3. इन चारों हरकतों को चार दिशाओं में (आगे, पीछे, दाहिने और बाईं तरफ) शरीर के इन हिस्सों के साथ करो–पीठ का निचला हिस्सा नितंब संधि, कमर और टांगें।

4. अपने पैरों की उंगलियां पर धीरे–धीरे खड़े हो जाओ, फिर वापस एड़ियों पर आओ। अब थोड़ा आराम करो (खड़े–खड़े)।

5. अपनी बांहों को पूरी ताकत से आगे–पीछे हिलाओ।

6. अपनी बांहों और टांगों को इस तरह हिलाओं मानो उनको कहीं फैंक देना चाहते हो।

यह सब करते समय तुम्हारी कोशिश यह रहनी चाहिए कि शरीर के जिस हिस्से से तुम हरकत करना चाहते हो, केवल वही हिले, न कि पूरा शरीर। और ध्यान रहे–ज्यादा जोश अच्छा नहीं। कहीं थकान से बिस्तर पकड़ने की नौबत ना आ जाए।

बिना तैयारी की रचना

आगे कुछ उपाय दिए गए है, जिनसे तुम्हारी समझ में बदलाव और नयापन आ सकेगा।

1. मान लों कि तुम एक छोटे से बीज हो। तुम जमीन के नीचे से धीरे–धीरे ऊपर आ रहे हो, और धूप व हवा की तरफ बढ़ने लगते हो। अब तुम एक नई दुनिया में हो–अपने आसपास को देखो, फिर पौधो से बड़े होते हुए पेड़ बन जाओ। करीब की चीजों और जीवों से मिलो–जुलो; भिनभिनाती मधुमक्खियां, घास चरती गाय, सुंदर तितलियां, जोरदार बारिश, और दूषित हवा से भी। फिर तुम बूढ़े होने लगते हो, खड़े लेकिन झुके भी, उस दिन तक, जब तक तुम्हें काटा नहीं जाता है।

अगला उपाय इससे एकदम अलग है।

2. यह सोचो कि तुम एक संकरी सी नली में सफर कर रहे हो –कहां ? एक बीमार वैज्ञानिक की रक्त धारा में । सावधान ! यहां सफेद रक्ताणु तुम

पर हमला कर रहे हैं। अब तुम वैज्ञानिक के धड़कते हुए दिल के बीच में खिंचे जा रहे हो। कभी तुम अंतड़ियों पर चढ़ रहे हो, कभी पेट के रस में तैर रहे हो, तो कभी बालों के जंगल से लड़ रहे हो।

3. कैसा लगा ? शायद यह अभ्यास कुछ कठिन हो गया। चुनौती की तरह था ना! अब कोई साधारण सी रोज घटने वाली ऐसी स्थिति लो जिसमें चार से सात मित्र भागीदारी निभा सकें। जैसे कि :

–विद्यार्थी नकल करता हुआ पकड़ा जाए

–रेलगाड़ी दुर्घटना

–एक रात जब चोर घुस आए

–घरेलू झगड़े

अब शायद तुम अपने भी कुछ विचारों को रूप देने के लिए तैयार हो। कई एक तुम्हें अखबार में ही मिन जाएंगे । किसी भी दिलचस्प खबर को ले कर उसमें कुछ अदला–बदली कर लो। दूसरा तरीका है, विभिन्न कहानियों के पात्रों को मिलाना–जैसे बीरबल और टार्जन को सिपाही और जोकर...? जब तुम्हारी कल्पना फुर्ती से दौड़ने लगे,समझ लो कि तुम नाटक के रास्ते पर चल पड़े हो।

चलो नाटक करें

और क्यों नहीं ? तुम अब नाटक के लिए अच्छी तरह तैयार हो, क्योंकि तुम तो कितने अभिनय कर भी चुके हो– मूर्ति का, मशीन के हिस्से का, शरीर के हिस्सों की कसरत, अलग–अलग शक्लें, कविता का अभिनय तथा बहुत सारी अकस्मात रचनाएं भी।

कहानी ढूंढ़ो

कहां ? अपनी भाषा की किताब देखो–हिंदी, अंग्रेजी या और किसी भी भाषा की । इसमें तुम्हें कुछ अवश्य मिलेगा। इसके अलावा तुम्हारे आस–पड़ोस या गांव में भी जीती–जागती कहानियां मिलेंगी। किसी को भी चुन सकते हो।

थोड़ा विचार करें कि कहानी में ऐसी कौन सी बात है, जिससे उसको नाटक बनाया जा सकता है। पहली बात है ''ड्रामा'' यानि कोई समस्या/विवाद या संघर्ष । यह कुछ भी हो सकता है– जैसे अल्लादीन और उसके चचा का जादुई चिराग पर विवाद या फिर ऐसी स्थिति जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को कुछ लेने से रोकना चाहता है जैसे रामायण में कैकई ने राम को राजा बनने से रोका।

यहां यह भी ध्यान में रखना होगा कि ऐसी कहानी चुनें जो मंच पर की जा सकती है। अगर तुम्हारा ड्रामा धरती की दौड़ से अंतरिक्ष और समुद्र तल तक जाता है, तो कुछ और चुनो।

नाटक और पात्र

नाटक के प्रारंभ में ही इस बात का ध्यान रखो कि नाटक में कितने लोगों (यानी पात्रों) की जरूरत है। साथ में यह भी कि क्या नाटक के सभी पात्रों का अभिनय तुम्हारी मंडली के मित्र कर सकते हैं या नहीं।

किसी भी साधारण कहानी से शुरुआत हो सकती है। उसके लिए पात्र चुन लो, फिर उसकी रूपरेखा (प्लाट आउट लाइन) पर काम करने लगो। सबसे पहले तो कहानी की सभी घटनाओं को उनके सही क्रम में लिख लें। फिर इस रुपरेखा को अलग–अलग हिस्सों यानी दृश्यों में बांट लें। हर दृश्य की शुरुआत, मध्य भाग और अंत साफ समझ में आए। दूसरी बात कि हर सीन के साथ कहानी को आगे बढ़ना चाहिए। बल्कि मजा तो तब आयेगा जब हर दृश्य अपने से पहले दृश्य से बिल्कुल अलग ही भाव का हो ।

हो सकता है कि दृश्य की तैयारी करते समय तुम्हें कुछ बदलाव करने की जरूरी महसूस हो। इसके लिए अच्छा यह होगा कि तुम प्रत्येक दृश्य के बाद रुक कर उस पर बातचीत करो। देखो कि उसमें क्या–क्या कमियां और खूबियां हैं। प्रत्येक दृश्य में कई बार अदल–बदल करने के बाद ही तुम जान पाओगे कि उसे बेहतर ढंग से कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है।

इसके बाद तुम या तो नाटक के सारे डायलाग (बातचीत) और ऐक्शन (क्रिया) लिख कर पूर्वाभ्यास (रिहर्सल)कर लो। दोनों के अपने–अपने लाभ हैं। परंतु याद रहे–यदि तुम अपना नाटक एक से अधिक बार करना चाहते हो तो लिखी हुई स्क्रिप्ट जरूरी है।

क्लाइमैक्स/चरम बिंदु

नाटक का क्लाइमैक्स या चरम् बिंदु अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण होता है, इसलिए तुम्हारे दिमाग में इसका नक्शा बिल्कुल साफ होना चाहिए। यह भी जरूरी है कि आखिरी दृश्य से पहले सस्पेंस (अनिश्चय) बना रहे। इससे दर्शक में यह जानने की लालसा बनी रहेगी कि आगे क्या होने वाला है।

दर्शकों की रुचि बढ़ती है कि नाटक के विभिन्न भावों (मूड) से। दुख भरे दृश्य के बाद खुशी हो, या किसी डरावने अभिनय के बाद हंसी मजाक; ऐसे में दर्शक मंच से बंधा रहता है।

क्लाइमैक्स या अंत एक ऐसी गांठ की तरह होता है जो कहानी के सभी धागों को सही तरीके से बांध ले। इस तैयारी के बाद ही नाटक को खेलने की सोचो। नाटक के पहले दृश्य में भी कुछ बातें जरूरी हैं– उसे नाटकीय (ड्रामेटिक) होना चाहिए, सारे या अधिकतर पात्रों का परिचय करा देना चाहिए ताकि तुम नाटक की क्रिया (ऐक्शन) में सीधा कूद पड़ो। नाटक की शुरुआत हमेशा धमाकेदार होना चाहिए।

जगह का चुनाव

अब यह तय करना है कि तुम्हारे नाटक के लिए उचित जगह कौन सी होगी ? नाटक बाहर होगा या अंदर, कितने दर्शक उसे देखने आएंगे, वे कहां बैठेंगे,क्या सभी दर्शक अपनी–अपनी जगह से नाटक को अच्छी तरह देख–सुन पाएंगे या नहीं। यह सब ध्यान में रख कर स्थान का चुनाव करो।

नाटक की ओर

अब बारी आती है पूर्वाभ्यास यानि रिहर्सल की। रिहर्सल में तुम्हें नाटक की कहानी और स्क्रिप्ट को अच्छी तरह जान लेना है, याद कर लेना है। नाटक के सभी पात्रों को इकटठा करो। सभी लोग स्क्रिप्ट को कई बार पढ़ें, ताकि वे अपनी आवाज और चेहरे के भाव ज्यादा से ज्यादा प्रभावी बना सकें। इसके बाद हर पात्र को दूसरे पात्रों के साथ नाटक की क्रियाओं का अभ्यास करना चाहिए। यह उतनी ही जगह में होना चाहिए जितना कि आपका रंगमंच है, उससे बहुत ज्यादा या कम जगह में नहीं।

पहले रिहर्सल में यह तय हो जाना चाहिए कि तुम्हारे दर्शक कहां बैठेंगे, और रंगमंच पर तुम्हारा सामान (कुर्सी, मेज आदि), पेड़, सीढ़ियां वगैरह कहां रहेगा। हो सके तो इन चीजों की जगह को चाक से निशान लगा लें।

इसके बाद सभी अभिनेताओं को अपने–अपने संवाद (यानि जो भी उनको नाटक में बोलना है) याद कर लेना चाहिए।

परिष्कृत पूर्वाभ्यास (पालिशिंग रिहर्सल)

सभी पात्रों को अपने संवाद याद हों तथा नाटक की समूची प्रक्रिया सुनिश्चित कर ली जाए; इसी के बाद नाटक में जान आती है। यहां तुम्हें एक और बात पर गंभीरता से काम करना है–पात्रों की एक–दूसरे के साथ प्रतिक्रियाएं कैसी हैं या होनी चाहिए। छोटे–छोटे अंश, अलग–अलग पात्र कैसे खड़े होंगे, या बैठेंगे या चलेंगे – भी तय किया जाए।

रंगमंच के पीछे

नाटक तो वह हुआ जो दर्शक देखेंगे, लेकिन उसको सफल बनाने में कई बातें महत्वपूर्ण होती हैं। रंगमंच के पीछे होते हैं–सेट्स और सामग्री, वेशभूषा और मेकअप (श्रृंगार), प्रकाश और संगीत । सेट के बारे में तो तुम पढ़ चुके हो। अब थोड़ा ध्यान कुछ दूसरी चीजों पर :

वेशभूषा

जरूरी नहीं है कि वेशभूषा भड़कीली–चमकीली हो। हां, वेशभूषा पात्रों के अनुरूप जरूर होना चाहिए। अब तुम बूढ़े भिखारी को नए, साफ, सुंदर कपड़े पहन कर तो मंच पर भेजोगे नहीं । पहले तो यह जान लो कि तुम्हारा नाटक किस युग और स्थान का है, वहां के लोग कैसे कपड़े पहनते थे। फिर,विस्तृत रूप से एक सूची बनाओ कि प्रत्येक पात्र क्या पहनता है;टोपी,जूते, हाथ में पकड़ने का सामान आदि।

वेशभूषा में अंतर रखना जरूरी है। अगर तुम्हारे नायक/नायिका एक रंग में हैं जो खलनायक हो दूसरे रंग के कपड़े पहनाओ। इस तरह रंगों के अंतर से , पात्रों के विभिन्न व्यक्तित्व भी उभर आएंगे। वेशभूषा के लिए तुम्हें कई जगह से सामान मिल सकता है। अपने घर में ही छानबीन करके देखो– पुरानी साड़ियां, परदे, चादरें तक काम आ सकती हैं। घर के किसी सदस्य या अपनी नाटक मंडली के किसी व्यक्ति से मशीन पर कपड़े सिलवा सकते हो। सिलाई की जगह पिन और स्टेपल करने से भी काम बन सकता है। पेंट किए या चिपकाई गई आकृतियां, चाहे कागज की ही क्यों न हों,भी सुंदर लगती है। वेशभूषा में कल्पना का बहुत महत्व है, खासकर जब तुम्हें पात्रा को तितली, समुद्र या दूसरी दुनिया के प्राणी के कपड़े पहनाना हो। वेशभूषा का काम करते समय पात्र की किसी भी एक विशेषता को ध्यान में रख कर चलो– जैसे, तितली के पर, समुद्र के लिए मास्क या बड़ी चादर जैसा लबादा।

मेकअप (श्रृंगार)

अभिनय के लिए जरूरी नहीं कि सभी बन–ठन के रहें। सादगी का अपना असर होता है। तय तो तुम्हें यह करना है कि किन पात्रों को श्रृंगार की जरूरत है–अगर किसी को बूढ़ा दिखाना है तो उस पर ध्यान दो। बालों को सफेद पर बनाने के लिए पाउडर या जिंक आक्साइड का इस्तेमाल हो सकता है। काजल–पेंसिल के साथ चेहरे पर कुछ लकीरें डालने से व्यक्ति बूढ़ा सा नजर आता है। किसी को डरावना बनाना है तो उसके पूरे चेहरे पर काली–मोटी पेंसिल और लिपस्टिक से गोल चक्कर (घेरे) और दूसरे आकार बना दो। ध्यान रहे कि हर पात्र को अपनी वेशभूषा का भी रिहर्सल चाहिए, इसलिए किसी एक रिहर्सल में इसका अभ्यास जरूर करों एक दर्पण के सामने बैठ कर देखो कि तुम्हारा मेकअप कैसे हो सकता है। अलग तरह के मुंह बना कर भी देखो कि तुम्हारा मेकअप तुम्हारे चेहरे के भावों को कैसा प्रभाव देता है। याद रहे कि अभिनय करते समय दर्शक को तुम्हारे भाव कुछ दूरी से दिखाई देगें।

प्रकाश

एक साधारण टेबल लैंप भी तुम्हारे नाटक में विचित्र असर ला सकता है। प्रकाश के ऊपर रंगीन पन्नी लगाने से मंच पर अलग ही प्रभाव पड़ता है– नीला रंग रात के दृश्य हेतु, भय के भाव के लिए लाल रंग। प्रकाश द्वारा उचित प्रभाव लाने के लिए अलग–अलग ऊंचाइयों से इसका प्रयोग करें। टेबल लैंप को जमीन पर रख कर दीवार पर परछाइयां बनाई जा सकती हैं। कोई सीन केवल परछाइयों द्वारा भी दिखाया जा सकता है (जिसमें पात्रों पर प्रकाश आगे की बजाए पीछे से पड़े और उनकी परछाइयां एक कपड़े पर आएं)। किसी दृश्य मे मोमबत्ती या दियों का प्रयोग हो सकता है। या फिर साधारण टार्च पर रंगीन पन्नी लगा कर नए प्रभाव पैदा किए जा सकते हैं। थोड़े से परिवर्तन से अद्‌भुत प्रभाव देखने को मिल सकते हैं, जिनका अभ्यास तुम्हें पहले से होना चाहिए। परंतु सावधान ! बिजली कोई खेल नहीं है।

संगीत

नाटक को सही भाव (मूड) देने में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके लिए या तो रिकार्ड किया हुआ संगीत इस्तेमाल किया जा सकता है, या मंच के पीछे कलाकारों से साज बजवा सकते हैं । अगर टेप रिकार्डर का प्रयोग हो रहा है तो कब, कहां, कौन सा संगीत बजेगा, और कितनी देर बजेगा; इसका लिखित विवरण तैयार होना चाहिए। संगीत असाधारण हो तो उसका प्रभाव अधिक होगा। कुछ ऐसा चुनें जो दुख,सुख और भय के भावों के लिए सही माहौल बनाए रखे।

ध्वनि प्रभाव

नाटक में विभिन्न ध्वनि प्रभाव लाना कोई कठिन काम नहीं है। हम कुछ ऐसे उदाहरण बता रहे हैं, जिनका प्रयोग आप अपने नाटक में भी कर सकते हैं एक पानी के गिलास में स्ट्रा/पाइप डाल कर उसमें हवा फूंको और उसकी आवाज टेप कर लो। (यह तेज बहती नदी जैसा सुनाई पड़ता है)। माइक में सीधे फूंक मारो (तूफान की आवाज का असर आता है)। साधारण घड़ी की टिक–टिक को टेप कर लो (एक टाइम बम जो फूटने वाला है)। इसके अलावा रोजाना जीवन की आवाजें–चिड़ियों का चहचहाना,सुबह–सवेरे चिड़िया और कौवे, कार का इंजन चलाना, फिर चलने का स्वर, आदि। इन सभी ध्वनियों को कभी धीमा, कभी ऊंचा, बहुत ऊंचा कर सुनें। देखो कि इनका प्रभाव कैसा निकलता है। ध्यान रहे कि संगीत और ध्वनि प्रभाव तुम्हारे नाटक को और दिलचस्प तो बना सकते हैं, लकिन ये दोनों पूरी तरह से हावी नहीं होने चाहिए।

ड्रेस रिहर्सल

नाटक के ड्रेस रिहर्सल से पहले तीन–चार रिहर्सल बिना रुकावट के होने चाहिए। इनमें निर्देशक को केवल अभिनेताओं की गलतियां लिखनी चाहिए, रिहर्सल समाप्त होने के बाद ही उन पर बातचीत होनी चाहिए। इस समय आलोचना से ज्यादा जरूरी है हौंसला बढ़ाना।

ड्रेस रिहर्सल के समय पात्रों के साथ–साथ नाटक में काम करने वाले सभी इकटठ्ा होते हैं–मंच के पीछे काम करने वाले,मंच अभिनय करने वाले, सेट और सामग्री बनाने वाले, प्रकाश और संगीत के प्रभारी, वेशभूषा और श्रृंगार का काम करने वाले। साधारण तौर पर अंतिम ड्रेस रिहर्सल पर ही रंगमंच के परदा उठने–गिरने का अभ्यास किया जाता है।

तुम्हारे दर्शक

अब नाटक तो तैयार है, सो यह भी कोशिश करो कि बहुत सारे लोग उसको आ कर देखें । दर्शकों की जानकारी के लिए हाथ से तैयार पोस्टर/इश्तेहार कई जगह लगाए जा सकते हैं–स्थानीय क्लब, स्कूल में,पुस्तकालय या दुकानों में। पोस्टर में तुम्हारे नाटक का नाम, तारीख, समय और स्थान जरूर लिखा होना चाहिए। नाटक के टिकट या तो हाथ से बना लें या फिर सस्ते रबर के ठप्पे से कागज पर छाप लें।

बैठक व्यवस्था

अब वह दिन आ गया जब तुम्हारा नाटक रंगमंच पर खेला जाएगा। अपने दर्शकों के बैठने के लिए तकिये और कुर्सियां इस तरह लगाओ कि देखने में सुंदर लगें। सभी को मंच अच्छी तरह दिखाई देना चाहिए। कुछ लोगों की जिम्मेदारी होगी कि वे दर्शक को उनकी सीट/जगह तक पहुंचाए। अगर तुम्हारे नाटक में मध्यांतर (इंटरवल) है तो यही लोग कुछ खाने–पीने का प्रबंध भी कर सकते हैं।

पात्र

रंगमंच पर अभिनय करने से पहले सभी अभिनेताओं को अच्छी तरह आराम करना चाहिए। ठीक समय पर नाटक के कपड़े पहन कर श्रृंगार की तैयारी कर लेनी चाहिए। ध्यान रहे कि श्रृंगार करने में अधिक समय लगता है और तुम्हें अपने दर्शकों को इंतजार नहीं करवाना चाहिए। निर्देशक को नाटक से पहले अपने अभिनेताओं के साथ कुछ समय बिता कर उनका हौसला बढ़ाना चाहिए ताकि मंच पर कोई गलती भी हो तो वे घबराए नहीं, बल्कि संभाल सकें और नाटक को आगे ले जा सकें। सबको अपनी शुभकामनाए देना न भूलें।

नाटक/शो के बाद

तालियां! खेल खत्म–पैसा हजम! लेकिन नहीं, नाटक के बाद भी कुछ जिम्मेदारियां रहती हैं। अपने दर्शकों से मिलने, बधाई आदि स्वीकार करने के बाद यह न भूलो कि वेशभूषा का सामान,सेट कुर्सियां, तकिये आदि को संभाल कर रखना है। फिर क्या ? तुम अपने सफल–कामयाब नाटक का जश्न मनाओं। एक–दो दिन के बाद एक पार्टी रखो जहां खाने–पीने के साथ यह चर्चा भी हो कि नाटक में क्या ठीक हुआ, क्या नहीं। और फिर अपने अगले नाटक की तैयारी में जुट जाओ !